3:17, 18
अन्तिम निर्देश

[17]इसलिये हे प्रियो, तुम लोग पहले ही से इन बातों को जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फँसकर अपनी स्थिरता को कहीं हाथ से खो न दो। [18]पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।

पतरस की पत्री का आरंभ उसके पाठकों को नम्रता से संबोधन करने के साथ हुआ था। उसने उन्हें अपने मसीह का प्रेरित होने के प्रमाणों के बारे में स्मरण करवाया। उसने उन्हें आश्वस्त किया कि उसके ज्ञान का स्त्रोत प्रभु में था। जो सन्देश उन्होंने पहले से सुना वह परमेश्वर का सच्चा ज्ञान था। इसके पश्चात, प्रेरित ने अपना ध्यान झूठे उपदेशकों की ओर किया जो कलीसियाओं को विभाजित और नाश कर रहे थे। यहाँ, पत्री की समाप्ति पर, उसके लिए यह उपयुक्त था कि वह उस पर वापस आए जिसे वह और उसके पाठक जानते थे। क्योंकि उसने उन्हें लिखा था, ये मसीही सचेत किए गए थे। वे पहले से जानते थे कि झूठे उपदेशकों ने अपमानजनक दावे किए थे, और वे ऐसे दावे करते रहेंगे। अपनी ओर से, पाठकों को उसी ज्ञान में बढ़ते जाना था जिसमें पतरस उन्हें लेकर आया था।

आयत 17. पतरस की पत्री कोई भावात्मक निबन्ध नहीं थी। उसने उन लोगों को लिखा था जिन्हें वह जानता और प्रेम करता था। उसके साथी मसीही उसके प्रिय थे। प्रेरित की कोई पूर्व निर्धारित कार्यसूची नहीं थी, न तो उसे किसी से पलटा लेना था, न ही कोई लाभ अर्जित करना था। उसने इसलिए लिखा जिससे **वे अधर्मियों के भ्रम में फँसकर अपनी स्थिरता को कहीं हाथ से खो न दें**। वह चाहता था कि ये मसीही उसके साथ उस नए आकाश और नई पृथ्वी में साझा हों जहाँ "धार्मिकता वास करेगी" (3:13)। यह पत्री इसी विषय पर है। उसने इसलिए लिखा जिससे कि वे **पहले ही से** जान लें और [वे] **चौकस रहें**। पतरस समझता था कि मसीह के पास आना एक बात है; मसीह के साथ विश्वासयोग्यता से जीना और बात है। उसे चिन्ता थी कि उसके पाठक परमेश्वर के अनुग्रह को कहीं **हाथ से खो** न दें।

मसीही अगुवे के लिए झूठे उपदेशकों से व्यवहार करने से अधिक कठिन कम ही कार्य होते हैं (2:1)। बहुतेरे यह दिखावा करने का प्रयास करते हैं कि वे हैं ही नहीं। मसीही होने के लिए जिस बात कि आवश्यकता है वह है सत्यनिष्ठा। सत्य सापेक्षिक है; सत्य वह है जिसे कोई सत्य समझता है। जो एक के लिए सत्य है, आवश्यक नहीं है कि वही दूसरे के लिए भी सत्य हो। हम सब ने ये तर्क सुने हैं। वे

इक्कीसवीं शताब्दी के पश्चिमी संस्कृति में उतने ही व्याप्त हैं जितने वे दो हज़ार वर्ष पहले यूनानी-रोमी संस्कृति में थे।

अमेरिकी ऐसे संसार में रहते हैं जहाँ करिश्माई अगुवे बड़े-बड़े गिरजा घरों में अपने श्रोताओं का अच्छा मनोरंजन करते हैं और संपन्नता, स्वास्थ्य, तथा संपदा का "सकारात्मक" संदेश देते हैं। लोग इसे पसन्द भी करते हैं। हर बात सकारात्मक और उत्साहवर्धक होती है। अनुयायी पंक्तिबद्ध होकर अन्दर आते तथा पंक्तिबद्ध होकर बाहर जाते हैं। प्रबंधक किसी भी सामाजिक समस्या का निपटारा कर देते हैं। उन के लिए मसीही जीवन जीने की सीमा रविवार की प्रातः एक अच्छा, सकारात्मक "आत्मिक" अनुभव ही होती है। उनमें से किसी के लिए भी पतरस की दूसरी पत्री "सकारात्मक सन्देश" की सूची में नहीं होगी। उसने "अधर्मियों" के विषय सचेत किया, जो उसके पाठकों को मसीह से ले जा रहे थे; उसने उन से आग्रह किया कि वे भटका न दिए जाएं। अधिकांश अनुमानों के अनुसार इस दूसरी पत्री में बहुत कुछ "नकारात्मक" था।

प्रेरित को "भ्रम" के बारे में बोलने से भय नहीं है। पतरस ने झूठे उपदेशकों का सामना करने के लिए यीशु मसीह का प्रेरित होने (1:1) के पद का उपयोग किया। आधुनिक मसीहियों के पास, यदि उन्हें भ्रम का सामना करना है तो, पवित्रशास्त्र है। जुझारू होना कोई मनोहर कार्य नहीं है। लेकिन फिर भी 2 पतरस जुझारू है। खोए हुओं को मसीह का सुसमाचार बताना व्यक्तिगत रीति से अधिक लाभप्रद होता है न कि बचाए हुओं को सचेत करना कि वे अपनी स्थिरता को खो देने के जोखिम में हैं। अधिकांशतः ऐसी चेतावनियाँ अनसुनी की जाती हैं। कभी-कभी विश्वासयोग्य होने के निवेदन से संघर्ष हो जाते हैं। इस कार्य से संबंधित सभी कठिनाइयों के होते हुए भी, पतरस ने इसका बीड़ा उठाया। उसने अपने पाठकों से स्थिर रहने को कहा। उसने निवेदन किया, "हर ऐसे व्यक्ति की जो कोई विशेष प्रकाशन पाया हुआ होने का, या ज्ञान का कोई विशेष स्त्रोत पाने का दावा करता है मत सुनो।"

झूठी शिक्षाओं का प्रतिरोध ज्ञान से है। विश्वासियों को, यदि "स्थिरता" में बने रहना है, तो उन्हें ज्ञानवान व्यक्ति होना होगा। उन्हें पता होना चाहिए कि वे क्या विश्वास करते हैं और क्यों उसमें विश्वास करते हैं। उन्हें पवित्रशास्त्र में दिए गए ज्ञान से अपने आप को भर लेना चाहिए। कलीसिया का सिद्धांत ही उसे चलाने वाले पाल को भरने वाली वायु है। हमें पहले सचेत किया गया है कि हमें कलीसिया के सिद्धांत को लेकर बेपरवाह नहीं होना चाहिए। ज्ञान उत्साही मसीही को विश्वासयोग्यता की ओर ले जाएगा; ज्ञान रहित उत्साही विश्वासी विपत्ति के साथ टकराव के मार्ग पर हैं।

आयत 18. पतरस के समाप्ति के ये शब्द मसीही चेतावनी का नमूना हैं। उसने कहा, बढ़ते जाओ। यह पहली बार नहीं है कि उसने माँग की कि मसीही यात्रा ऊपर की ओर हो। जब प्रेरित ने मसीही सदगुणों की अपनी सूची 1:5-8 में प्रस्तुत की, तो उसने बढ़ोतरी की माँग की। जब उसने एक के ऊपर दूसरा सदगुण जोड़ा, तो उसने शब्द "बढ़ाते" प्रयोग किया। जिन गुणों को ले लेने के लिए पतरस

ने अपने पाठकों से ले लेने के लिए आग्रह किया उनमें से एक है "समझ।" उसने पत्री के आरंभिक शब्दों में प्रार्थना की "परमेश्वर की और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए" (1:2)। यह सही है कि प्रेरित पत्री के अन्तिम पद में "पहचान" पर लौट कर आया।

बढ़ते जाने के आग्रह में **प्रभु का अनुग्रह** और **पहचान** दोनों ही हैं, परन्तु इन दोनों में बारीक सा अन्तर है। अनुग्रह प्रभु द्वारा प्रदान किया जाता है। इसे धन्यवाद के साथ ग्रहण किया जाता है। मसीह अनुग्रह प्रदान करता है; मसीही पहचान का अनुसरण करता है। बढ़ते जाने का आग्रह अधिक उचित तब प्रतीत होता है जब उसका विषय पहचान है न कि तब जब विषय अनुग्रह है। संभवतः पतरस का यह अर्थ था: यीशु मसीह का अनुग्रह विश्वासियों को प्राप्त होता रहेगा जैसे-जैसे वे उसमें विश्वास के साथ जीते रहेंगे। पतरस के मन में अनुग्रह की ऐसी कोई तकनीकी परिभाषा नहीं थी जैसी पौलुस की पत्रियों में मिलती है। पौलुस के लिए, अनुग्रह परमेश्वर का अनुग्रह पूर्ण कार्य था जिसके द्वारा वह मसीह में उद्धार को आरंभ और प्रदान करता है। इस अर्थ में अनुग्रह कर्मों से ऊपर रखा गया है। यह परमेश्वर के अनुग्रह से है, न कि मनुष्य के कर्मों से, कि कोई उद्धार पाता है। पतरस ने इस शब्द को उस सामान्य तात्पर्य से प्रयोग किया जो अर्थ उसका यूनानी बोलने वाले संसार में था। जब उसने विश्वासियों को अनुग्रह में बढ़ने का आग्रह किया, तब उसने इस शब्द को मसीह की कृपा और आशिषों के अर्थ के साथ प्रयोग किया। मसीह अपनी आशिषें उन्हें प्रदान करता है जो प्रेरितों के सन्देश में स्थिरता से बने रहते हैं। जैसे उन्हें प्रभु के प्रेम में, और जो उसने उनके लिए किया था उसकी पहचान में बढ़ना था, वैसे ही उन्हें पवित्र और ईश्वरीय जीवन में बढ़ना था, उन्हें प्रभु के अनुग्रह में बढ़ना था।

जैसे व्यवहार से प्रभु के "अनुग्रह" की अनुभूति में बढ़ोतरी हुई वैसे ही से "पहचान" में भी बढ़ोतरी हुई। मसीही जीवन कभी गतिहीन नहीं हो सकता है। एक जीवित प्राणी के समान वह या तो बढ़ता रहेगा अन्यथा घट जाएगा। जो करिश्माई उपदेशकों के द्वारा दिए जाने वाले लुभावने सन्देशों के प्रति संवेदनशील होते हैं, समझ में उनका ही सबसे कमज़ोर आधार होता है। जो मसीहियत की यदा-कदा होने वाले भावनात्मक अनुभवों से तुलना करते हैं वे ही स्थिरता को खो देने के सबसे अधिक जोखिम में होते हैं। इसी कारण पतरस ने इन विषयों को यहाँ पत्री के अन्त में एक साथ रखा। उसने कहा "चौकस रहो।" कोई अपनी चौकसी बनाए रखता है जिससे कि जब वह समझ में बढ़े तब वह "भ्रम में फँसकर अपनी स्थिरता को कहीं ... खो न दे।" विश्वासयोग्यता के लिए कोई छोटा मार्ग नहीं है।

पत्री का अन्त **उद्धारकर्ता यीशु मसीह** की स्तुति के साथ होता है। यह असामान्य है कि स्तुति सीधे मसीह को संबोधित हो। अधिक सामान्य रीति से स्तुति का विषय परमेश्वर पिता होते हैं। यह कहने पर भी, यह अनपेक्षित नहीं है कि पतरस अपनी पत्री का अन्त यह कहकर करे **कि मसीह की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे**। पत्री के आरंभिक पद में उसने "हमारे परमेश्वर और

उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता" का उल्लेख किया था। मसीह को स्तुति और प्रशंसा अर्पित करना परमेश्वर को अर्पित करना था। यीशु प्रत्येक रीति से ईश्वरीय है। "युगानुयुग" और "परमेश्वर का दिन," "मसीह का दिन," "प्रभु के लौटने का दिन," "न्याय का दिन" सभी एक समान हैं। अन्तिम वाक्य में सारा समय आ जाता है: "उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"